

सं. ४६६९

नाम. प्रमरकोशः

\* \* \* \*

पत्र सं. ४७ — सं. \*

नियमः कोशः



सुभरकोशः

धरु

4991

✓ # 1, 15, 16, 21, 25 to 30,  
and 32 to 39 Missing

F. = 29



स्त्रिदशा विबुधास्सुराः ॥ सुपर्वाणस्सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवोकसः ॥ ७ ॥ आदि ते या दिविषदो  
लेखा आदि तिनन्दनाः ॥ आदित्या कृभवो स्वप्ना अमर्त्या अमृतान्धसः ॥ ८ ॥ वर्हि सुखा  
ऋतुभुजोगीवीण दानवारयः ॥ वृन्दारका देवता निपुं सिवा देवता स्त्रियान् ॥ ९ ॥ आदि  
न्ये विष्णु वसवस्तुषिता भास्वरानिलाः ॥ महाराजिक साध्या अरुद्रा अंगण देवता ॥ १० ॥  
विद्याधरा सरोय द्यौर्दोगेन्द्रा रियानवाः ॥ पिशाचो गृह्यक सिद्धो भूतो भी देव योनयः ॥ ११ ॥  
असुरा दैत्य दैत्य दनुर्जेन्द्रारियानवाः ॥ शुक्रा शिष्या दिति सुता पूर्व देवास्सुरा द्यौः ॥ १२ ॥  
सर्वस्सुगता बुद्धा धर्मेराजस्तथागतः ॥ समन्तमद्रो भगवान्मार्जितलोकजिज्जिनः ॥ १३ ॥  
षडभिज्ञो द्रष्टा वलोद्वयवादी विनोयकः ॥ मुनिन्द्रा श्रीधनप्रशास्ता मुनि साक्य मुनिस्तुयः ॥ १४ ॥



देवकी नन्दन प्रसादः श्रीपतिं ध्युत्तमः वनमालिवाला सौकं सारातिरंधो दत्तजः ॥ २९ ॥

संप्राकये सिंहः सर्वधि सिद्धः शोडोदनिश्चयः ॥ गौतमश्चार्कवन्धुश्च माया देवी सुतश्च सः ॥

ब्रह्मात्मभूस्सुरज्येष्ठं परमेष्ठी पितामहः ॥ हिरण्यगर्भलोके प्राः स्वयंभूश्चतुराननः ॥ १६ ॥

धातां ज्योतिर्दुहिणे विरञ्जि क्रमलासनः ॥ मृष्टाप्रजापतिर्वेधाविधाता विष्णुसृग्वि

धिः ॥ १७ ॥ विष्णुनीरायण कृष्णविक्रण विष्टरश्वाः ॥ यमोदरो हृषीकेशाक्षोरावो

माधवस्त्वर्भूः ॥ १८ ॥ देव्यारिः पुण्डरीकोद्दोगो विन्दोर्मरुद्भुजः ॥ पीताम्बोरच्युतश्चाङ्गी

विष्णुकुसेनोजेनार्दनः ॥ १९ ॥ उपेन्द्र इन्द्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः ॥ प्रद्युम्नोभोमधु

रिपुवीर्यसुदेवस्त्रिविक्रमः ॥ २० ॥ विश्वभूषेणमजिद्विधुः श्रीवत्सलांकुनः ॥ वसुदे

वोऽस्य जेनकस्स एवा नक दुन्दुभिः ॥ २१ ॥ वलमर्दः प्रतापवधो वलदेवो च्युताग्रजः ॥ रेव

सर्वेष्वन्यामित्यादिशान्तिविमुक्तपुण्यपुरुषोदात्तगौरीविशेषी गङ्गागजेन्द्रराज्य



पद्य

तीरमणोरामकामपालो हलायुधः ॥ २३ ॥ नीलाम्बरो रोहिणेयस्तालाङ्गो मुसली हली ॥ सङ्क  
 र्षणस्सीरपाणिः <sup>पदानि प्राप्तिनियमः</sup> कालिन्दीभेदनेवलः ॥ २४ ॥ <sup>मनमयः विमनयः</sup> मदनो मन्मथो मारः <sup>प्रद्युम्ना</sup> मीनकेतनः ॥ कन्यपी  
 दप्यको नङ्गो कामपञ्च शरः स्मरः ॥ २५ ॥ सम्वरारिर्मनसि ज्ञेयकुसुते शुरनन्यजः ॥ पु  
 ष्पधन्वारतिपतिर्मिकरध्वज आत्मभूः ॥ २६ ॥ ब्रह्मसूक्तकेतुस्स्याद निरुद्ध उषापतिः  
 लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीहरि त्रियाः ॥ २७ ॥ मारमोदधिजा सम्पद्भरणी लोकविश्रुता  
 इन्दुरालोकमाता माक्षीराधितनयारमा ॥ २८ ॥ <sup>मृगालक्ष्मी</sup> प्रोक्षे लक्ष्मीपतेषाञ्च जन्यञ्च <sup>गङ्गा</sup> ज्ञेयञ्च <sup>न</sup> सुदर्शनः ॥ को  
 मोदकीरादाखिज्ञानन्यककोस्तुभामणिः ॥ २९ ॥ <sup>कुरुक्षेत्राद्वनमणि</sup> गरुत्मानारु <sup>गङ्गा</sup> इस्ताक्षी <sup>न</sup> वेनतेयः <sup>पद्म</sup> खगेश्वरः ॥ ना

लक्ष्मीनामनि  
 इन्द्रमगद  
 मानि

शङ्खलक्ष्मी

निरुद्धनामानि

मनस्यार्थं वेनतेय पद्मिनेषां पद्मिनीश्वरः











देवतकृतानामनि

एवमंचेदेव एतद्विधाने

सत्तन्य तेषु पण्यमिदं विनिर्दिष्टं सत्तनः २८

सुगंगा नामानि

सुगंगा नामानि

यद्गङ्गा स्वर्गदीपु रदीर्घिका ॥ ५६ ॥ मेरुस्सु मेरुहेमा द्वीरुक्मसानुस्सुरालयः ॥ पञ्चैते देवतरवो  
 मन्दारः पारिजातकः ॥ ५७ ॥ सत्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसिवा हरिचन्दनम् ॥ सनत्कुमारो  
 वैधात्रः स्ववैधावाञ्चनी सुतौ ॥ ५८ ॥ नासत्या वाञ्चनो दक्षा वाञ्चने योक्ता वाचिभौ ॥ स्त्रियां  
 बहुष्षरसस्सुर्वश्या उर्वशी मुखः ॥ ५९ ॥ घृताची मेनका रंभा उर्वशी चातलोत्तमा ॥ सु  
 केशी मञ्जुघोषाद्याः कथ्यन्ते शरसे बुधे ॥ ६० ॥ हा हा हू हू ऋषमाद्या गन्धर्वी स्त्रिदिवोक  
 सः अग्नि वैज्या नरो वक्रवीति हे त्रोधनञ्जयः ॥ ६१ ॥ कृपी पयोनिर्ज्वलनो जातवेदास्तनू  
 नपात ॥ बर्हिः शुष्मा कृष्णवत्मा शोचिके वा उषर्वध ॥ ६२ ॥ आश्रया सो व ह द्वा नुष्कशा

मन्त्रा आराधारा  
यत्वेति २८

न्यामिनी कुम्भ  
रामानि ३

न्यामिनामा  
नि ३



४८  
अ.

५

नुः पावको नलः॥ लोहिताश्वो वायुसख शिखा वा वानाशुक्षणिः॥ ६३॥ हिरण्यपरेता द्रुते भुग्दह  
नो हव्यवाहनः॥ सप्तार्चिर्दमुनाशुक्रः श्रित्रभानुर्विभावसुः॥ ६४॥ शुचिरप्यित्तमो विस्रुवा  
उवो वडवानलः॥ वरुहो ह्यो ज्योतिर्लोकालावर्चिर्हति शिखा रवास्त्रियाम्॥ ६५॥ त्रिषु स्फु  
लिङ्गो ग्निकोणसन्तापसंज्वरस्समो॥ ३८॥ ल्कास्पनिर्गता ज्योती भूतिभीस्मिन्तमस्मानिदं  
धर्मराजः पितृपतिस्समवर्ती परेतराट्॥ कृतातो यमुनाभ्राता प्रामन्ते च मराण्डाम्॥ ६६॥  
कालोदण्डधरश्चाद्देवो वैवस्वतो न्तकः॥ वेताधिपः पशुहस्तकीनाशो भृत्युरर्कजः॥ ६७॥  
राक्षसः कोणपः क्रव्याक्रे व्यादोस्त्रपश्चासरः॥ रात्रिश्चरौ रात्रिचरः कर्तुं शोनिषात्मजः॥

का



<sup>१</sup>यातुधानः <sup>२</sup>पुण्यजनो <sup>३</sup>नैकृतो <sup>४</sup>यातुराक्षसी ॥ <sup>५</sup>प्रचेतो <sup>६</sup>वरुणः <sup>७</sup>पाश्रीया <sup>८</sup>दसां <sup>९</sup>पतिर <sup>१०</sup>पतिः ॥ ६ ॥ <sup>११</sup>ज्वसनः  
<sup>१२</sup>स्य <sup>१३</sup>शिनो <sup>१४</sup>वायु <sup>१५</sup>मृत्त <sup>१६</sup>रिश्वा <sup>१७</sup>सदा <sup>१८</sup>गतिः ॥ <sup>१९</sup>पृषद <sup>२०</sup>ज्वगन्ध <sup>२१</sup>वहो <sup>२२</sup>गन्ध <sup>२३</sup>वाहो <sup>२४</sup>नित्य <sup>२५</sup>जुगाः ॥ ७ ॥ <sup>२६</sup>समीर <sup>२७</sup>मारुत  
<sup>२८</sup>मरु <sup>२९</sup>जैग <sup>३०</sup>त्प्राण <sup>३१</sup>समीरणः ॥ <sup>३२</sup>नभस्व <sup>३३</sup>दात <sup>३४</sup>पवन <sup>३५</sup>पवमान <sup>३६</sup>प्रभञ्जनाः ॥ ८ ॥ <sup>३७</sup>प्राणो <sup>३८</sup>पात <sup>३९</sup>समान <sup>४०</sup>ज्योदान  
<sup>४१</sup>व्यानो <sup>४२</sup>चवायवः ॥ <sup>४३</sup>हृदि <sup>४४</sup>प्राणो <sup>४५</sup>गुर्दे <sup>४६</sup>पान <sup>४७</sup>समानो <sup>४८</sup>नाभि <sup>४९</sup>संस्थितः ॥ ९ ॥ <sup>५०</sup>उदान <sup>५१</sup>कण्ठ <sup>५२</sup>देवा <sup>५३</sup>स्थो <sup>५४</sup>व्यान <sup>५५</sup>स  
<sup>५६</sup>वपरीरगः ॥ <sup>५७</sup>शरीर <sup>५८</sup>स्था <sup>५९</sup>इमे <sup>६०</sup>रह <sup>६१</sup>स्तर <sup>६२</sup>सीतुर <sup>६३</sup>वस्य <sup>६४</sup>दः ॥ १० ॥ <sup>६५</sup>जवो <sup>६६</sup>धु <sup>६७</sup>श्री <sup>६८</sup>ध्व <sup>६९</sup>वरित <sup>७०</sup>ले <sup>७१</sup>द्यौ <sup>७२</sup>क्षिप्र <sup>७३</sup>म  
<sup>७४</sup>रंदुत <sup>७५</sup>मू ॥ <sup>७६</sup>सत्वरं <sup>७७</sup>चपलं <sup>७८</sup>तू <sup>७९</sup>र्लम <sup>८०</sup>विलम्बित <sup>८१</sup>मा <sup>८२</sup>जुच ॥ ११ ॥ <sup>८३</sup>संततान <sup>८४</sup>नरता <sup>८५</sup>अन्त <sup>८६</sup>संतत <sup>८७</sup>विरता  
<sup>८८</sup>निशामू ॥ <sup>८९</sup>नित्यो <sup>९०</sup>नैवर <sup>९१</sup>ता <sup>९२</sup>ज <sup>९३</sup>स्त्रम <sup>९४</sup>प्यथा <sup>९५</sup>ति <sup>९६</sup>शो <sup>९७</sup>यो <sup>९८</sup>भरः ॥ १२ ॥ <sup>९९</sup>अति <sup>१००</sup>वेला <sup>१०१</sup>भृषा <sup>१०२</sup>त्या <sup>१०३</sup>यीति <sup>१०४</sup>मा <sup>१०५</sup>त्रो <sup>१०६</sup>ह  
<sup>१०७</sup>ठनि <sup>१०८</sup>भर <sup>१०९</sup>मू ॥ <sup>११०</sup>त्री <sup>१११</sup>वैका <sup>११२</sup>तनि <sup>११३</sup>तान्ना <sup>११४</sup>निगा <sup>११५</sup>ढ <sup>११६</sup>वो <sup>११७</sup>ढ <sup>११८</sup>ह <sup>११९</sup>छानि <sup>१२०</sup>च ॥ १३ ॥ <sup>१२१</sup>ली <sup>१२२</sup>वैशी <sup>१२३</sup>ध्रा <sup>१२४</sup>द्य <sup>१२५</sup>सत्वे <sup>१२६</sup>स्था



ॐ  
श्री  
६

कस्मिन्नेवमस्यसुखोः

नमः

कुवेरनामानि १२२

१

४

४

४ पनंतिः

४

त्रिष्वंसां सत्वगामियत्नः॥ कुवेरस्त्राम्बकमखोयदाराङ्गुल्यके श्वरः॥ १८॥ मनुष्यधर्माधनदो राजराजो  
धनाधिपः॥ किन्नराणां श्रेष्ठः॥ पोलस्त्वेन रवाहनः॥ १९॥ यज्ञोक्ते पिङ्गलविलज्जिदं पुराणं  
जनेश्वराः॥ अस्योद्यानचेत्रं रघुपुत्रस्तु नलकुवेरः॥ २०॥ केलासंस्थानं मलकापूर्वमानेन नृप  
स्य कम॥ स्यात्किन्नरः किंपुरुषस्तुरङ्गवदनो मयुः॥ २१॥ निधिनाशो वधिर्भेदाप्रशाङ्कः पद्माद  
यो निधेः॥ महापद्मश्च पद्मश्च शङ्खो मकरकक्षपोः॥ २२॥ मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च  
निधयो नवः॥ इति स्वर्गवर्गः॥ द्यौर्दिवो द्यौस्त्रियाम्भुवो मैपुष्करमम्बरम्॥ नभोन्निरिक्षं  
गगनमनन्तं सुरवर्त्मरिवम्॥ वियद्विष्णुपदं वापि पुंस्यां काशा विहायसी॥ तारापथो वा  
नाको मेघाद्धार्यं महाविलम्बम्॥ २३॥ इति द्यौर्मवर्गः॥ दिशस्तु ककुभक्काष्टाश्चाशाश्च ह

विहाय सोपि नाकोपि पुराणस्य तद्व्यवस्थां नोवाचरेत्







वर्षीनामद्वयं

चिद्वत्तुशब्दनामादि

१ शक्राशुचनामद्वयं

ॐ अ  
७

ला अपि॥ <sup>१</sup>जयुर्वज्रनिघोषो <sup>२</sup>मेघन्योतिरिर्मदः॥८॥ <sup>३</sup>इन्द्रायुधशक्रधनुस्तदेव <sup>४</sup>रुजुरोहि  
तम॥ <sup>५</sup>दृष्टिर्वषतद्विधातेवग्राहवग्राहो <sup>६</sup>समोभू॥ <sup>७</sup>धारासंपातत्रासारसीकरो <sup>८</sup>सु  
कणाः स्मृताः॥ <sup>९</sup>वर्षीपलस्तु <sup>१०</sup>करकामेघश्च <sup>११</sup>नैरिडुद्विदम्॥११॥ <sup>१२</sup>अन्तधविंवद  
पुसित्वंते <sup>१३</sup>द्विपवारणम्॥ <sup>१४</sup>अपिधानतिरोधानपिधाना <sup>१५</sup>द्विदनानिच॥१२॥ <sup>१६</sup>हिमोश्रु  
श्चन्द्रमाश्चन्द्र <sup>१७</sup>इन्दुमुदवान्धवः॥ <sup>१८</sup>विधुस्तुधाश्रुश्रुभाश्रु <sup>१९</sup>रोषधीशो <sup>२०</sup>निष्पापतिः॥१३॥  
अज्ञो जैवात्रिके <sup>२१</sup>सो <sup>२२</sup>नाग्लो <sup>२३</sup>मृगा <sup>२४</sup>कृष्णलो <sup>२५</sup>निधिः॥ <sup>२६</sup>द्विजराज <sup>२७</sup>श्रु <sup>२८</sup>श्रुधरो <sup>२९</sup>नद <sup>३०</sup>समः  
त्रैशः <sup>३१</sup>संपाकरः॥ <sup>३२</sup>कलात <sup>३३</sup>प्रोडे <sup>३४</sup>शोभा <sup>३५</sup>गोविन्धो <sup>३६</sup>स्त्रीमण्डल <sup>३७</sup>त्रिषु॥ <sup>३८</sup>भित्त <sup>३९</sup>सकला  
स्वण्डवापु <sup>४०</sup>स्य <sup>४१</sup>इ <sup>४२</sup>सै <sup>४३</sup>मेश <sup>४४</sup>को॥१५॥ <sup>४५</sup>चन्द्रिका <sup>४६</sup>को <sup>४७</sup>मु <sup>४८</sup>दी <sup>४९</sup>ज्यो <sup>५०</sup>त्स्ना <sup>५१</sup>प्रसा <sup>५२</sup>दस्तु <sup>५३</sup>प्रसन्नता

चंद्रार्धनाम  
२४=२

सुवर्तनिश कतत्तेसोतः २=

इन्द्रनामादि



ॐ  
आ  
८

चंद्रकलंकनामानि

धुगतिस्थैर्यं वतीति सुपुत्रपायतरुतिः

परमशोभानामानि मिनि

कलङ्काङ्कोलाङ्केनञ्चचिद्विलक्ष्मचलक्षणा॥१६॥ सु<sup>१</sup>प्र<sup>२</sup>मो<sup>३</sup>पर<sup>४</sup>मो<sup>५</sup>शो<sup>६</sup>भा<sup>७</sup>आ<sup>८</sup>भा<sup>९</sup>कान्ति<sup>१०</sup>  
द्युति<sup>११</sup>श्रु<sup>१२</sup>विः॥<sup>१३</sup>अ<sup>१४</sup>व<sup>१५</sup>प्र<sup>१६</sup>या<sup>१७</sup>य<sup>१८</sup>स्तु<sup>१९</sup>नी<sup>२०</sup>हार<sup>२१</sup>स्तु<sup>२२</sup>धार<sup>२३</sup>स्तु<sup>२४</sup>हि<sup>२५</sup>नं<sup>२६</sup>हि<sup>२७</sup>मं<sup>२८</sup>॥<sup>२९</sup>प्रा<sup>३०</sup>ले<sup>३१</sup>यं<sup>३२</sup>हि<sup>३३</sup>मि<sup>३४</sup>कं<sup>३५</sup>चा<sup>३६</sup>य<sup>३७</sup>हि<sup>३८</sup>मा<sup>३९</sup>  
नी<sup>४०</sup>हि<sup>४१</sup>मं<sup>४२</sup>सं<sup>४३</sup>हृ<sup>४४</sup>तिः॥<sup>४५</sup>श्री<sup>४६</sup>त<sup>४७</sup>गु<sup>४८</sup>णै<sup>४९</sup>त<sup>५०</sup>द<sup>५१</sup>ध<sup>५२</sup>र्मा<sup>५३</sup>स्व<sup>५४</sup>मी<sup>५५</sup>म<sup>५६</sup>प्रि<sup>५७</sup>प्रि<sup>५८</sup>रि<sup>५९</sup>ज<sup>६०</sup>डः॥१७॥<sup>६१</sup>तु<sup>६२</sup>वे<sup>६३</sup>र<sup>६४</sup>प्रि<sup>६५</sup>प्रि<sup>६६</sup>त<sup>६७</sup>लः<sup>६८</sup>श्री<sup>६९</sup>तै<sup>७०</sup>  
हि<sup>७१</sup>मं<sup>७२</sup>स्म<sup>७३</sup>प्रान्<sup>७४</sup>ना<sup>७५</sup>लिङ्ग<sup>७६</sup>का॥<sup>७७</sup>ध्रु<sup>७८</sup>व<sup>७९</sup>उ<sup>८०</sup>तै<sup>८१</sup>न<sup>८२</sup>पा<sup>८३</sup>दि<sup>८४</sup>स्या<sup>८५</sup>द<sup>८६</sup>ग<sup>८७</sup>स्त्यः<sup>८८</sup>कु<sup>८९</sup>म्भ<sup>९०</sup>स<sup>९१</sup>म्भ<sup>९२</sup>वः॥<sup>९३</sup>मै<sup>९४</sup>त्रै<sup>९५</sup>व<sup>९६</sup>रु<sup>९७</sup>णै<sup>९८</sup>र<sup>९९</sup>स्य<sup>१००</sup>  
व<sup>१०१</sup>लो<sup>१०२</sup>पाम<sup>१०३</sup>मृ<sup>१०४</sup>दा<sup>१०५</sup>स<sup>१०६</sup>ध<sup>१०७</sup>र्म<sup>१०८</sup>णी॥<sup>१०९</sup>न<sup>११०</sup>द्वै<sup>१११</sup>त्रै<sup>११२</sup>म<sup>११३</sup>द्वै<sup>११४</sup>भं<sup>११५</sup>तार<sup>११६</sup>तार<sup>११७</sup>का<sup>११८</sup>प्यु<sup>११९</sup>डु<sup>१२०</sup>वो<sup>१२१</sup>स्त्रि<sup>१२२</sup>याम्॥१८॥<sup>१२३</sup>दा<sup>१२४</sup>दा<sup>१२५</sup>धि<sup>१२६</sup>  
ए<sup>१२७</sup>पो<sup>१२८</sup>श्रि<sup>१२९</sup>व<sup>१३०</sup>नी<sup>१३१</sup>त्या<sup>१३२</sup>दि<sup>१३३</sup>तार<sup>१३४</sup>अ<sup>१३५</sup>श्रि<sup>१३६</sup>व<sup>१३७</sup>यु<sup>१३८</sup>गं<sup>१३९</sup>श्रि<sup>१४०</sup>नी॥<sup>१४१</sup>रा<sup>१४२</sup>धा<sup>१४३</sup>वि<sup>१४४</sup>शार<sup>१४५</sup>वा<sup>१४६</sup>पु<sup>१४७</sup>ष्पे<sup>१४८</sup>तु<sup>१४९</sup>सि<sup>१५०</sup>द्ध<sup>१५१</sup>ते<sup>१५२</sup>ष्यो<sup>१५३</sup>अ<sup>१५४</sup>वि<sup>१५५</sup>व<sup>१५६</sup>या<sup>१५७</sup>२१  
स<sup>१५८</sup>मा<sup>१५९</sup>धा<sup>१६०</sup>नि<sup>१६१</sup>ष्टा<sup>१६२</sup>स्युः<sup>१६३</sup>प्रो<sup>१६४</sup>च<sup>१६५</sup>य<sup>१६६</sup>दा<sup>१६७</sup>म<sup>१६८</sup>द्र<sup>१६९</sup>प<sup>१७०</sup>दा<sup>१७१</sup>स<sup>१७२</sup>माः॥<sup>१७३</sup>मृ<sup>१७४</sup>गं<sup>१७५</sup>श्री<sup>१७६</sup>चि<sup>१७७</sup>मं<sup>१७८</sup>ग<sup>१७९</sup>शि<sup>१८०</sup>रं<sup>१८१</sup>स्त<sup>१८२</sup>स्मि<sup>१८३</sup>न्ने<sup>१८४</sup>वा<sup>१८५</sup>ग्र<sup>१८६</sup>ह<sup>१८७</sup>यि<sup>१८८</sup>णीः॥२१॥  
समाधानिष्टास्युः प्रोचयदामद्रपदासमाः॥ मृगश्रीचिमंगशिरेस्तस्मिन्नेवाग्रहयिणीः॥२२॥

६४=२



सो नस्य शिरोदेशे नारका निवसन्ति नादल्ला

वृहस्पतिनामानि

सुगणोच्चार्या

गणयाः पति

४

५

६

अ.

ततयति

इत्येतास्तास्त्रिंशो देशे नारका निवसन्ति याः॥ वृहस्पतिस्तुराचार्यो गीष्पतिर्द्विषणो गुरुः॥ २३॥ जीवा  
आगिरसो वाचस्पतिश्चित्राक्षिरवण्डिजः॥ शुक्रो देवगुरुर्काव्यो उग्रानाभा गविः कविः॥ २४॥ अङ्ग  
रककुजो भोमोलोहिताङ्गो मही सुतः॥ रोहिण्यो बुधस्सोम्यस्समो सौरिप्राने अरौ॥ २५॥ शनिमन्यो  
पङ्ककालो व्यायो पुत्रोर्कनन्दनः॥ तमस्तुराङ्गस्त्वभनिस्संहिकेयो विधुन्नुदः॥ २६॥ केतुश्शशिकी  
तुविज्ञेयो वरुणो मरुमात्मजः॥ मङ्गर्वयो मरीच्यत्रिमुखो अत्रिश्चित्राक्षिर्जुनः॥ २७॥ राश्रीनामुद  
यो लग्नं ते तु मेघवृषादयः॥ मेघो वृषो व्यानश्च्युनर्कर्कटो स्सिंहकन्यके॥ २८॥ तुलाथवा अथैकोध  
चीमकरः कुम्भमीनकौ॥ सूरसूर्योर्ध्वमादित्यद्वादशात्मदिवाकराः॥ २९॥ भस्करो हस्करश्च

विधुन्नुदः

राश्रीनामुद

रामः

८

सप्तत्रिंशत् पत्र २ =

© Dharmapala Trust 1889 Digitized by eGangotri

गणः वसिष्ठस्तिस्रो ते ज्ञेया अत्रिश्चित्राक्षि नः २ =



<sup>१</sup> ध्रुवभाकरादिवोकराः॥<sup>२</sup> भास्वद्विस्वत्सप्राज्वहरिदज्जोद्वारप्रमयः॥<sup>३</sup> ॥<sup>४</sup> विकर्तनार्कमार्तण्ड  
<sup>५</sup> मिहिरारुणपूषणाः॥<sup>६</sup> द्युमणिसुरणिभिर्विचित्रभानुविरोचनाः॥<sup>७</sup> ॥<sup>८</sup> विभावसुग्रहपातस्त्वि  
<sup>९</sup> वापतिरहर्ष्यतिः॥<sup>१०</sup> भानुहस्तिस्महस्त्राशुस्तेपनस्संवितारविः॥<sup>११</sup> ॥<sup>१२</sup> करणिनीजगच्चदुर्लभ  
<sup>१३</sup> कवन्धुस्त्रयीतनुः॥<sup>१४</sup> प्रद्योतनोदिनमणिःखद्योतोलोकवोन्धवः॥<sup>१५</sup> ॥<sup>१६</sup> इन्द्रोभगो धामनिधिस्त्वं  
<sup>१७</sup> शुमाल्यज्जनीपतिः॥<sup>१८</sup> मातुरःपिङ्गलोदण्डश्चाण्डाशोष्पारिपार्श्वकाः॥<sup>१९</sup> ॥<sup>२०</sup> सूर्यसूतोरुणेनूरुका  
<sup>२१</sup> श्यपिगरुडामृजः॥<sup>२२</sup> परिवेषस्तुपरिधिरूपसूक्तमण्डले॥<sup>२३</sup> ॥<sup>२४</sup> किरणोस्त्रिमयूषाशुगमस्तिद्युति  
<sup>२५</sup> रप्रमयः॥<sup>२६</sup> भानुकरोमरीचस्त्रीपुंसयोदीधितिस्त्रियाम्॥<sup>२७</sup> ॥<sup>२८</sup> स्युःप्रभासगुचिस्त्विज्जिभा  
<sup>२९</sup> श्कूविद्युतिदाहयः॥<sup>३०</sup> रोचिप्रशोचिस्सुभेलीवैप्रकाशोद्योतन्नातपः॥<sup>३१</sup> ॥<sup>३२</sup> कोष्ठाकवोद्वल

कमलनीलमणिः

यत्र

कर्मसंग्रहादि

यः पुरः यः सह

समीपं वारानो

सवारिपाश्वर

कः १ = ४







सर्गिष्ययां दुःसाहोने भवेति वा निसर्गमनासायानुरविशक्तिः ३३॥ वृद्धा विवदः ३३॥  
सर्गिष्ययां दुःसाहोने भवेति वा निसर्गमनासायानुरविशक्तिः ३३॥ वृद्धा विवदः ३३॥

यदिनेसर्गदुःसाहोने भवेति वा निसर्गमनासायानुरविशक्तिः ३३॥ वृद्धा विवदः ३३॥

सर्गिष्ययां

पुष्पिमाः॥ कलाहीनेसानुमतीपुष्पिका निष्ठाकरे॥ अभावस्यावमवास्यादधीस्तुर्येनुसङ्गमः॥ ८॥ साह  
वृन्दुसिनीवालीमानवेकुं कलाकुहः॥ उपरागो गहारादुगस्तत्विन्द्याचपक्षिच॥ ९॥ सोपपुवोपर

तौदाविगन्तुपाहिते॥ एकयुक्त्यापुष्पवन्तौ दिवा करनिष्ठाकरो॥ १०॥ अर्कः दानियास्तुकाष्टास्त्रि मे  
प्राप्नुताः कलाः॥ तास्तु निशान्तरास्तुमुहूर्तौ द्वादशस्त्रियाम्॥ ११॥ तत्तु त्रिंशदहोरात्रः पक्षस्तदष्टा पञ्चक  
पक्षोपुष्पपिरोष्ठुल्ककृद्भौमास्तु तावुभौ॥ १२॥ दौदौमाद्यादिमासास्तु सैरयनं त्रिभिः॥ अयने द्वे गति

रुद्रादक्षिणां कस्यवत्सरः॥ १३॥ समरात्रि दिवकाले विषुद्विषुवच्चतुर्तः॥ पुष्पयुक्तापोसिमसीपोवेमसे  
तुयत्रसा॥ नन्वासिपोवामाद्याद्यज्जिवमकादष्टापर॥ १४॥ मार्गशीर्षे संहामार्ग अग्रहायणिकज्जसः॥ १५

पोषैतैव सरुस्योद्वेनपामाद्यथफाल्गुणे॥ स्यात्तपमाफाल्गुणिकः स्याच्चैत्रे चैत्रिको मधुः॥ १६॥



वेदां खेमाधवो राधो ज्येष्ठे शुक्रः शुचि स्त्रियां । आषट् आवाणे तु स्यान्मभांश्च वारुणिकश्च सः ॥ ११ ॥  
 स्तुन्नभस्यः प्रोष्ठपदभाः कृमादपदास्समाः ॥ स्यादाश्चिन्नद्वयोः श्वयुजोऽपि स्यात्तु कार्तिके ॥ १२ ॥ वाङ्मूलो  
 ज्जो कार्तिके कोहिमन्तविषा प्रारो स्त्रियां ॥ वसन्तयुष्य समयः सुरभिर्ग्रीष्म उष्मकः ॥ १३ ॥ निदा  
 घ उद्गोपगम उद्गोपगमस्तपः ॥ स्त्रियां प्राट् स्त्रियां भू निवर्षी अथ प्रारत्स्त्रियां ॥ १४ ॥  
 घड्मी कृतवः पुंसि मागी दीनो युगेः क्रमात् ॥ संवत्सरो वत्सरो वौहयनो स्त्री प्रारत्समाः ॥ १५ ॥  
 मासेन स्यादहोरात्रः पेत्रो वर्ष देवतः ॥ देवैर्युग सहस्रद्वौ ह्यः कल्पौ तु तेनृणाम् ॥ १६ ॥ मन्वन्त  
 रन्तु दिव्यानां युगा मेक सप्ततिः ॥ सम्वर्तः प्रलयः कल्पः क्षयः कल्पान्त इत्यपि ॥ १७ ॥ अस्त्रीपं  
 कं पुमान्याप्यापायं किल्बिष कल्मषम् ॥ कलुषं वह्निनै नो घमं होडु रिडु कृतम् ॥ १८ ॥ स्या

अ.  
 १



<sup>प्रयत्नास्मिन्</sup> इममस्त्रियां पुण्यं प्रथमं सुकृतं वृषः॥ <sup>हर्षनामास्मि</sup> मुत्प्रीतिः प्रमदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदः॥ २५॥ <sup>स्वादानन्दपु</sup> सानन्दप्रमोदात्तसुखानि च॥ <sup>कल्याणानामास्मि</sup> स्वः प्रयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम्॥ २६॥ भावुकं भविकं भव्यं कु  
<sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> कुशलं क्षेममस्त्रियाम्॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> शास्त्रं चाप्यत्रिषु द्वयोः पापं पुण्यं सुखादि च॥ २७॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> मतं कामचर्चिकाप्रकाश  
<sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> एतमुद्धतलज्जौ॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> प्रप्राप्तवान् च कान्यं मुन्ययः शुभावहो विधिः॥ २८॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> देवं दिवं भागधेयं भाग्यस्त्रीनि  
<sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> यतिविधिः॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> हेतुर्नकारणवीजनिदानत्वादिकारणम्॥ २९॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> क्षेत्रज्ञात्मा पुरुषः प्रधानं ब्रह्मतिः  
<sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> स्त्रियाम्॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> विप्रो ब्रह्मालोकवस्था गुणस्सत्त्वरजस्तमः॥ ३०॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> जनुर्जननज्ञानानिरुत्पत्तिरुद्भवः  
<sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तु जन्यशरीरिणः॥ ३१॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> जाति जातन्तु सान्यं वा तैस्तु यगात्मता॥ चित्तं तु च  
<sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> तो रुदयं स्वान्तं हृन्मानसं मनः॥ ३२॥ <sup>यद्यप्यपि सुखं विदुः तेषां तद्विषय</sup> इति कालगर्भा॥ बुद्धिर्मनीषा धिवर्णाधीः प्रज्ञा शो मुखी महि



प्रमत्तेः परित्यागः श्रवणं । नूनपदपरणमन्यदेवादानमध्याहारः २=

श्री

११

मोक्षे पाथी  
ज्ञानम् ५=

प्रेक्षोपलब्धिश्चैतन्मिदं त्रतिपद्मपित्रे च नोः ॥ १ ॥ अध्याहारवर्ती मेधासङ्कल्पः कर्ममानम् ॥ चित्त  
 भोगो मनस्कारश्चैव संख्याविचारण ॥ २ ॥ अध्याहारमार्क अहो विचिकित्सा तु संशयः ॥ स  
 न्देहश्चापरोचाय समौ निर्णय निश्चयौ ॥ ३ ॥ मिथ्यादृष्टिर्नास्तिकता व्यापादादहो चित्तनम् ॥ समो  
 सिद्धान्तराज्ञानो भ्रान्तिर्मिथ्यामिति भ्रमः ॥ ४ ॥ सञ्चिदात्मः प्रतिज्ञानं नियमाश्रय संश्रवाः ॥ अङ्गीका  
 रं भ्युपगमप्रतिश्रवसमाधयः ॥ मोक्षे धीज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः ॥ मुक्तिः केवल्य  
 निर्वाणं ज्ञेयो निष्क्रेयसामृतम् ॥ ६ ॥ मोक्षोपगोप्यो ज्ञानमविद्याहंमतिः ॥ ज्ञेयम् ॥ रूपं शब्दग  
 न्धरसस्पर्शश्चाविष्येयम् ॥ १ ॥ गोचरादन्दिष्योश्च कृत्वा केविषयो द्रव्यम् ॥ कर्मद्रव्यं तु  
 पाश्चादिमनो नैत्रादिधीन्द्रियम् ॥ ८ ॥ तुल्यस्तु कथोस्त्रीमधुरोलवणः कण्डूः ॥ तित्को म्लश्चेरसाः

विषयवाचकाः २=

क१ पा१

तथा । कुरुभिः । वासनः । वज्रहेत्याम् ।



एतेरसाः पुंसितेयाः ॥ तदनुग्रहीयताः त्रिषु = ॥ विमर्देत्येपरिमलोगन्धेजनमनोहरे ॥ कामरिकायामानोदः कर्पूरे मूखपरिमलमम ॥ १ =

पुंसितदत्सुषडमीत्रिषु ॥ ९ ॥ विमर्देत्येपरिमलोगन्धेजनमनोहरे ॥ आमोदस्सोतिनिहारीवाच्य  
 लिङ्गत्वमागुणात् ॥ १० ॥ समाकर्षी तु निहारी सुरभिर्घ्राणतर्पणः ॥ इव गन्धः सुगन्धिः स्यादामोदीमु  
 खवासनः ॥ ११ ॥ पूतिगन्धस्तु दुर्गन्धो विस्मयादामिगन्धियत् ॥ शुक्लशुभ्रश्चिञ्चेत्तविषदस्वेतपा  
 एदुराः ॥ १२ ॥ अवदातः सितगौरौ वलक्षोऽनुनः ॥ हरिणः पाण्डुरं पाण्डु रीषं त्पाण्डुस्तु धूसरः ॥ १३ ॥ क  
 क्षौ नीलासितप्रयामकालप्रयामलमेचकाः ॥ पीतागौरौ हरिद्रावपलायो हरितौ हरितः ॥ १४ ॥  
 लोहितो रोहितो रक्तः शोणः कोकनदः कुविः ॥ अव्यक्तरागस्त्वरुणः श्वेतरक्तस्तु पादलः ॥ १५ ॥  
 प्रयावस्मात्कपिलौ धूम्रधूमलौ रुक्मलौ लोहितौ ॥ कडारः कपिलः पिङ्गपिप्राङ्गो वभ्रुपिङ्गलौ ॥ १६ ॥

गुरापर्यन्तं तद्वत्सुषु  
 यवलो



२२

अनेकंशनामानि

पुलायकः । सुसिंभवंति ।

नद्विषयमिति

चित्रं किं मयी कलमा यथावलैताश्च कवुरे ॥ गुणो गुला दयः पुंसि गुणिलिङ्गं सुतद्वति ॥ १७ ॥

इति धीवर्गः॥ ब्रह्मी तु भारती भावांगी बर्गिणी सरस्वती॥ व्याहार उक्ति लिपि ति भाषि तं वचं वच॥ २॥

अपपञ्चाऽपपञ्चादस्याच्चास्वपञ्चादस्तुवाचकः॥ तिङ् सुवन्त चयोवक्यं क्रियावाकारकान्विता ॥ २॥

श्रुतिः स्त्रीवेदः आत्मायस्त्रयीधर्मस्तु तद्विधिः ॥ स्त्रियो मूकसाम यजुषी इति वेदास्त्रयस्त्रयी ॥

शिरव्या कल्पे व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषं गतिः ॥ कुन्दसालक्ष्णं चैव वैजडं ज्ञो वेद उच्यते ॥ ४ ॥

शिक्षेन्यादिभुक्तं रङ्गमाङ्कारप्रणवसमा॥ इति हा संपुरावृत्तमुदात्ताद्यास्त्रयस्सुराः॥ ५॥ आन्दी

क्षीकदण नीतितकविद्यायशास्त्र्याः॥ आख्यौयिकौपलाध्यायपुराणपञ्चलाक्षणम्॥६॥

पर्वदत्तः पादकस्य व्यासादिप्रणीतस्य मद्रूपम् । चतुर्थः अक्षितो नो तोयिता सोऽनन्दः स्मृतः ॥



शक्ति को पात्रराजः का कर्मपादिवन्धकस्य नाथाः कथानामैकम् २-धर्मस्मृतं शास्त्रं स्मृतिः तस्य नाम द्वापम् २-

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तस्य च ॥ वंशानुवन्तचरितं पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥ १॥ प्रवन्धकल्य  
ना कथा प्रवन्धिका ब्रह्मलिका ॥ स्मृतिस्तु धर्मसंहिता समाहुतिस्तु सग्रहः ॥ २॥ समस्यानु समा  
साध्या के च स्तुतिः ॥ वीतिप्रवृत्तिवृत्तान्त उदन्तः स्यादेष्टा दूयः ॥ ३॥ आख्या हे अभिधा  
नंच नामधेयंच नामच ॥ हृतिरकारणं हानं संहतिर्वदुभिः कृता ॥ ४॥ विवादो व्यवहारस्य  
दुपन्थासस्तु वाङ्मुखम् ॥ उपोद्घात उदाहारं प्रशयनशयः पुमान् ॥ ५॥ प्रश्नो नुयोगः प्रकीच  
प्रतिवाक्यो तरे समे ॥ मिथ्याभियोगो भ्याख्यानमथ मिथ्याभिसंज्ञनम् ॥ ६॥ अभिप्रायः प्राणद  
स्तुशब्दः स्यादेतु रागजः ॥ यथाः कीर्तिः समज्ञा च सर्वस्तोत्रं नुतिस्तुतिः ॥ ७॥ अमेडितं द्विस्त्रिंशत्



अथैषं पृथक् पठ्यते

शोकभीत्यादिना नने चरितकारसका कः

दशविंशत्यं निंदा गानि

घोषणम्

मुच्चैर्घु वृत्तु घोषणम् ॥ का कुंस्त्रियं वि कारोयः शोकभीत्यादिभिर्धने ॥ १४ ॥ अत्राणा क्षेप निर्वोदपरिवा

दापवादवत् ॥ ३ पक्रोशो जुगुप्सा च कुत्सानिन्दा च गं ई ए ॥ १५ ॥ पा रुष्यमतिवाद स्याद्भस्मनत्वपका

रगी ॥ यस्स निन्द ३ पालम्सने स्यात्परिभाषणम् ॥ १६ ॥ तत्र त्रिंशद्वा रण्यस्यापक्रोशो मेधुनं प्रातिः ॥

स्यादाभाणमालापः प्रलापो न च कंच ॥ १७ ॥ अत्र लापो मुकुभाषा विलोपः परिवेदनम् ॥ विप्रलापो विरो

धोक्ति संलापो भाषणमिधः ॥ सुप्रलापः सुवचनमपलापस्तु निरुवं ॥ सन्देहावागवाचं कं स्यादाग्ने

दास्तु त्रिवृत्तरे ॥ १८ ॥ रुषती वाग कलाणी स्यात्कला तु शुभात्मिका ॥ अत्र मधुरसात्व सङ्गतं

हृदय प्रमम ॥ २० ॥ निष्ठुरपरुषङ्गाम्यमश्लीलं नृत्तक्रिये ॥ सत्येय सङ्कलन्ति य परस्परपरा हते ॥



सत्यं न था मृ  
 मम्य वाम  
 निविषुतद  
 न = ३५  
 शं नृजा वि को न ग पा रं को । वीज  
 क्षि म् म् म् म् म् म् म् म् ॥ २ ॥



अ.  
२४

ली तु क ले स द मे ध नौ तु म ध रा स्फुटे ॥ क लौ म च स्तु ग म्नी रे ता रा त्य ज्ञे स्र य स्त्रि मु ॥ २ ॥ स म न्न त ल य  
स्त्रि क ता लो वी णा तु व ल की ॥ वि प ज्ञी सा तु त त्री भि स्तु त्रि भिः परि वा दि नी ॥ ३ ॥ त त म्बी ण दि क वा द  
मो न ड मु रु जी दि क म् ॥ वं शा दि क तु सु चि र द्वा स्त ता ला दि क द्ध न म् ॥ ४ ॥ च त्र वि धा म् द म्मा द्वा दि त्रा  
तो द्वा ना म क म् ॥ मृ द द्वा मु रु जी भि दौ स्त्र क्पा लि द्ध ध का स्त्रि यः ॥ ५ ॥ स्या द्वाः प ट हो ठ क्री भे री स्त्री  
दु न्दु भिः पु मा न् ॥ आ न कः प ट हो स्त्री स्या त्को णो वी णा दि वा द न म् ॥ ६ ॥ वी णा द एः प्र वा ल स्या त्का  
कु म्भ स्तु त्र स व कः ॥ को ल स्त्र क स्तु का यो स्या दु प ना हा नि द न्ध न म् ॥ ७ ॥ वा द्य प्र भे द म् रु म् डु डि ए म् रु रु रः ।  
मृ द लः प ण वो न्ये च न त् को ला सि के स मे ॥ ८ ॥ वि ल म्बि त न्दु तं मे ध न्नु त्वं मो द्यो ध न क्र मा त् ॥ ता लाः  
का ल क्रि या मा नं ल यः सा म्प म धा स्त्रि या म् ॥ ९ ॥ त ए ड व न ट न ना द्यं ला स्यं नु त्य च्च न त् न ॥  
का ह ला त्क्य भो डे स्या त् मु र वा या प च स च द न्

राम  
२४



अंतिमिरन्तमः॥ धानेगाठेन्यतमसंक्षीणेवतमसंतमः॥ इति पातालवर्गः॥ विष्वक्स्तमसं नागाः काद  
 वेयाः सदीश्वराः॥ शेषेन तवा सुकिस्तु सपरि राजोद्यमो न से॥ १॥ तिलित्स्यस्पादजगरे शयुर्वहस  
 इत्युभो॥ अलगर्दी जलव्यालस्समो राजिलडु एभो॥ २॥ मातुधानो मातुलाहि निर्मुक्तो मुक्तक  
 च्चुकः॥ सपरि पृदाकुभुजगो भुजङ्गो हि भुजङ्गमः॥ ३॥ आशी विषो विषधरश्चक्री बालस्सरी स्तपः  
 कुण्डली गूठया चक्षुःप्रवाकाकोदरः फणी ध्वनी करो दीर्घपृष्ठो दन्दश्रुको विलेपायः॥ ४॥ उरगः पन्न  
 गोभोगी जिह्मगः पवनाशनः॥ ५॥ त्रिष्वहय विषास्यादिस्फटाया तु फणा द्वयोः॥ समो कश्चुक  
 निर्मिको द्वेऽस्तु गरन्ध्रम॥ ६॥ पुंसि स्त्री वै च काकोल कालकूट हलाहला॥ सौ राष्ट्रिकः शोक्रि  
 केयो ब्रह्मपुत्रः त्रदीपनः॥ ७॥ दारदो वत्सनाभश्च विषभेदाश्चमी नवः॥ विषवेद्यो जाङ्गलिको



१७

का३॥ न्यालगासु तुंरिकाः कथ्यन्ते १

नरकनामानि ॥

ब्यालग्रहो हितु एड कः ॥ ८ ॥ इति भोगिवर्गः ॥ स्यान्नारकस्तु नरको निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ॥ तदे  
 दास्तपनावीचिमहारो रवरेवाः ॥ संसारः कालसूत्रं चैतपाद्याः सत्वास्तु नारकाः ॥ वेतावैतर  
 एीसिन्धुः स्यादुलदमीस्तु निरुद्धि ॥ २ ॥ वेष्टराजं कारणात्तु यानाती प्रवदना ॥ पीडावाधाव्य  
 यादुःखमां मनस्य प्रसूति जम् ॥ ३ ॥ स्यात्कवृष्ठकुमाभीलां त्रिं चेषाम्नेदगामियत् ॥ इति नरकवर्गः  
 समुद्रो धैरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ॥ ३ ॥ दन्वानुदधिस्मिन्धुस्तरस्वान्सागरो एवः ॥ १ ॥ रत्नाक  
 रोजलानि धियदिष्यति रंपापतिः ॥ तस्य प्रभेदाः क्षीरो दोलवर्णो दस्तथापरः ॥ २ ॥ आपः स्त्रीभूमिवा  
 वरिसालिलं कमलांजलम् ॥ पयः कीलालममृतं जीवमं भुवनं वनम् ॥ ३ ॥ कवन्धमुदकं पाथः पु

नामानि

रास

१७



करं सर्वतो मुखम् ॥ अम्बो <sup>नरेनामो</sup> एस्ते यपानीयनीरक्षीरान्मुद्राम्बरम् ॥ ४ ॥ मेघपुष्पघनरसस्त्रिषु देवैः  
 प्यमम्भयम् ॥ भङ्गस्तरङ्गकुर्मिवास्त्रियां वीचिर्योर्मिषु ॥ ५ ॥ मरुसूलोलकल्लोलोऽस्यादावर्त  
 म्रसाम्भ्रमः ॥ पृषत्तिविन्दुपृषताः पुमासो विप्रुषः स्त्रियः ॥ <sup>विन्दुनामा</sup> चक्राणि पुटभेदाः स्युभ्रमिश्च जलनिर्गमाः  
 कूलं रोधश्च तीरञ्च प्रातिरञ्च तदन्निषु ॥ ७ ॥ पारावारो परार्वाची तीरोपत्रतदंरम् ॥ द्वीपोऽस्त्रियामंत  
 रीपं यदन्तर्वारिणं तदम् ॥ ८ ॥ तोयो <sup>तेतिनामा</sup> स्थितं तल्लु <sup>लेजनामा</sup> लितं सैकतं सैकतामयम् ॥ विषधरस्तु जम्बालः प  
 क्षोस्त्रीशादकद्विमौ ॥ ९ ॥ जलोद्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ॥ नाव्यो <sup>वेडेनामा</sup> त्रिलिङ्गो नौ  
 तार्यो <sup>जाडीनामा</sup> स्त्रियां नौ स्तरणि स्तरिः ॥ १० ॥ उडुपनुल्लवः कोलः स्त्रोतो मुखसरणं स्वतः ॥ <sup>नौपातीनामा</sup> आतरस्तोरपणं



अ- १८

स्याद्रोणीकाष्टासुवाहिनी॥११॥ <sup>युष्मन्नामानि</sup> सायात्रिकः पोतवणिकः एधारस्तुनाविकः॥ नियामकाः को  
तवाहाः कूपको गुणवृषकः॥१२॥ नोकादण्डोपणी स्यादरित्रके निपातकः <sup>काष्ठकलनोमानि</sup> आभ्रः  
स्त्रीकाष्टकुदालास्सेकपत्रन्तुसेचनम्॥१३॥ <sup>येनानामानि</sup> यानपात्रन्तुपोतोधिभवेसामुद्रिय  
त्रिषु॥ सामुद्रिकोमतुव्यो <sup>वेडा नो लोमानि</sup> पिडातादोनोस्समुद्रिकाः॥१४॥ <sup>मन्त्राणां नामानि</sup> लोवेडनीवनावोड  
तीतनोकेतिनुत्रिषु॥ त्रिष्वागाधात्रिकुनोक्कः कतुघोनकु आविलः॥१५॥ निम्नङ्गभीरिंग  
म्भीरमुत्तानंतदपर्यये॥ अगाधमंतलस्यशंकैवर्तेदाशाधीवरो॥१६॥ <sup>मन्त्राणां नामानि</sup> आनीयः पुंसिजा  
लं स्याच्छुणस्तूत्रंपवित्रकम्॥ मत्स्याधानीकुवेणी स्यादडिप्रांमत्स्यवेधनम्॥१७॥ पृ

१८॥  
शमः



थुरों माऊ वों मत्स्योमी नो वै सारिलो एडजेः॥ विसार प्रशो कुली चांयग उकः शकुल भर्कौ॥ १८॥  
 सहस्र दंष्ट्रः पाठीन ३ लक्षी शिशुकं स्तमो॥ जलमीनं अलि चिमः शो व्यंतु प्राफरी द्वयोः॥ १९॥  
 सुद्रा एमत्स्य सङ्गतः पोता धान मथोऊषाः॥ रोहितो मङ्गुर प्रशा लो राजीवः शकुलं स्तिमि २०॥  
 तिमिङ्गिला दयं श्रांथया दां सिजल जनेवः॥ तद्देदा प्रिया श्रुमारो ईशं कवो मकरादयः॥ २१॥  
 स्यात्कुलीरः कर्कटकः कूर्मक मठक कूप्यो॥ ग्राहो वरहो नक्रं सुकुम्भी रोच्य मही लता॥ २२॥  
 गण्डपदः किञ्चुलुको निहाका गोधिके समे॥ रक्तपातु जलौकायां स्त्रियां भूमि जलौकसः २३॥  
 मुक्ता स्फोटः स्त्रियां श्रुतिः शङ्खः स्यात्किमुरा स्त्रियां॥ सुद्रप्रशङ्गा प्रशङ्गं नकाश्या मूका जलाशु  
 तयः॥ २४॥ भेके मण्डकवर्षा मूशाल रत्नवडुदराः॥ शिली गण्डप दी भेकी वर्षा मूक मठी उलिः



अ-  
१८

महुरस्य प्रिया मृदु नीमादीर्घा कोशिका ॥ जलाशयो जलाधारस्तत्रागाधजलोद्दः ॥ २६ ॥  
आवाहस्तु निपानं स्यादुपकूपजलाशये ॥ पुंस्ये <sup>पुंस्ये नमो</sup> वान्धुः प्रहिः कूप उदपानं च पुंसिवा ॥ २७ ॥ ने  
मिस्त्रिकास्पृवीनाहो मुखवन्धनमस्य यत् ॥ पुष्करिण्यां तु रवातं स्यादारवातं चैवरवातके ॥ २८ ॥  
पद्माकरसं <sup>ननु स्यात्</sup> उग्रीं स्त्रीका सारस्वरसी सरः ॥ वेदान्तः पल्लवश्चाल्य सुखे वापी तु दीर्घिका ॥ २९ ॥  
खेयन्तुपरिखाधारस्त्वन्नसायत्रधारणम् ॥ स्यादालवालमावासावापोचनदीसरित् ॥ ३० ॥  
तरङ्गिनी शैवलीनी तटिनी हृदिनी धुनी ॥ स्रोतस्वती दीपवती स्रवन्ति निम्नगापगा ॥ ३१ ॥  
कूलंकवानि ऊरिणा स्रोतोवक्त्रा सरस्वती ॥ गङ्गा विष्णुपदी जङ्गुतनया सुरनिम्नगा ॥ ३२ ॥  
भागीरथी त्रिपथगा त्रिस्तोता भीष्मस्वरुपि ॥ कालिन्दी सूर्यतनया यमुना श्रामनस्वसा ॥ ३३ ॥ रे

यमः  
१८

ॐ



रवातु नमो दासो मोद्रवामे कलकन्यका ॥ करतो या सदा नीरावा रुदाशीतवाहिनी ॥ ३४ ॥ शतद्रिस्तु  
 शतद्रुस्या द्विपाशातु विपाटुस्त्रियाम् ॥ शोणो हिरण्यवाहस्यात्कुलपाल्या के त्रिमासरित् ॥ ३५ ॥  
 शारवती वेनवती चन्द्रभागा सरस्वती ॥ कावेरी सरितो न्याञ्च सन्नेदसिन्धुसङ्गमः ॥ ३६ ॥ द्रयोऽप्य  
 लीपयसः पदव्या त्रिषु तरे ॥ देविकायां सरद्याञ्च भवेदा विकसारवो ॥ ३७ ॥ सौगन्धिकतुक  
 हारं हल्लंकरत सान्धिकम् ॥ स्यादुत्पलं कुवलयमथ नीलान्बुजनतमच ॥ ३८ ॥ इन्द्रीवरन्तु नी  
 लोस्मिंसिते कुमुदकैरिव ॥ प्रालूरमेघा कन्दस्याधारि पत्नी तु कुम्भिका ॥ जला नीले तु शोवा  
 लं शोवलोच कुमुद्वती ॥ कुमुदिन्यां नालिन्यां तु विक्षिणी पद्मनी मुख्याः ॥ बापुंसि पद्मे नालिनम  
 रविन्दम हो त्वलम् ॥ ४१ ॥ सहस्रपत्र कमलां प्रातपत्रं कुशोदयम् ॥ पङ्क रुहं तामरसं सार



अ.  
२३

करहृदिशि फलकं च किञ्चुलकः केसरोस्त्रियं

संसरसीरुहम् ॥ ४२ ॥ विसप्रसूनरा जीवपुष्करा न्नो रुहाणि च ॥ पुण्डरीकाक्षिता न्नो जमथ  
रक्तसरोरुहे ॥ ४३ ॥ रक्तोत्पलं कोकनदं नालोवा लामया स्त्रियाम् ॥ मणालं विसमञ्जादि  
कदम्बे खण्डमस्त्रियम् ॥ ४४ ॥ सम्यक्त्तिकानवदला म्बीजकोशो वराटकः ॥ इति वास्वर्गः ॥  
३ तं स्वर्गमिदं कालाधीशं दिसनाद्युक्तम् ॥ पतालाभोगिनरकं वा रिश्रेष्ठाच्च स  
नम् ॥ १ ॥ इत्यमरकोशो सुनादिका एते नाम लिङ्गानां सने प्रथमं कुरुता इत्युक्तम्  
नमर्थितः ॥ ३ ॥ अपि च पुरन्दरमाभूद नौषधि मृगादिभिः ॥ नृब्रह्मक्षत्रविद्वद्भिरुक्तम् ॥  
ते पाङ्गे रहोदित्वा ॥ १ ॥ भूमिश्च लानन्ता रसा विञ्चभरा स्थिराः ॥ धरा धरित्री च

२४  
गमः



तारोवत्तु दुर्गमम् ॥ गच्छति स्त्री क्रोशायुगं नृवं किं कुञ्चतु श्चातम् ॥ ११ ॥ घण्टापथस्सं सरांति  
 तुरस्योपनिष्करम् ॥ द्यावापृथिव्यो रोदस्यो द्यावाभूमी च रोदसी ॥ दिवः पृथिव्योः संज्ञातुरुमा  
 स्यात्प्रवर्णाकरः ॥ इति द्वितीये कारेण्डमूवर्गः ॥ ५ ॥ स्त्रीपुरी नगयो वापत्तनं पुटभेदनम् ॥ स्थानीय  
 निगमोत्पत्तयन्मूलनगरात्पुरम् ॥ १ ॥ तच्छ्रारवानगरं वेशो वेश्या जनसमाश्रयः ॥ आपण  
 तु निषेधो यो विपणिपण्वीथिको ॥ शिष्याप्रतोली विशारवास्थाश्च यो वदमस्त्रियाम् ॥ अका  
 रोवरणस्मालः आचीर्नञ्जान्ततो वृत्तिः ॥ ३ ॥ भित्तिः स्त्रीकुड्डी इका नदन्त्यस्तकीकसम् ॥ गृह  
 गेहो दवसितवेषमसद्वानिकेतनम् ॥ ४ ॥ निशान्तयत्त्वभवने सदनागारमन्दिरम् ॥ गृहाः पुमं

इमे



प्र.  
२२

सो भूस्नेवेनिकार्यनिधालया ॥५॥ <sup>कुटिलाशानी</sup> वासः कुटीरयोः प्रशाता सभासञ्जवनं विदम् ॥ चतुःप्रशातं मुनीनेन  
परिशातोऽजो स्त्रियाम् ॥६॥ <sup>हस्तनामा</sup> चैत्यमायतनं तुल्यं वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ आवेशनं शिल्पशाला प्रपाती  
यशालिका ॥७॥ <sup>नरसालासाम</sup> मुकुटोऽत्रादिनिलयोगञ्जातुमदिरागुरुम् ॥ गर्भागारं <sup>नरसालासाम</sup> वीसं गृहमारिष्टं सूतिकागृह  
कुटिमोस्त्रीनिवद्धा भूश्चन्द्रशाला शिरोगुरुम् ॥ <sup>वातीयुतगवाही</sup> वातीयुतगवाही धूमण्डयोऽस्त्रीजनाश्रयः ॥  
दिधनिता वासः प्रासादो देवभूजुजाम् ॥ <sup>धननामा</sup> सोधोऽत्राजि सदनमुपकार्योपकारिका ॥१०॥ स्वस्तिका  
सर्वतोभोजनं धावत्यादयोपिच ॥ <sup>मेलदलनामा</sup> विष्कन्दकप्रमेदाहिभव <sup>वातीयुतगवाही</sup> नीश्वरसद्गनाम् ॥११॥ स्त्रियागर  
भूजामतः पुरं स्यादवरोधनम् ॥ <sup>मेलदलनामा</sup> शुद्धान्तं आवरोधश्च स्याददृष्टः <sup>वातीयुतगवाही</sup> क्षोममस्त्रियाम् ॥१२॥ प्रघाणप्र  
णालिन्दावहिर्द्वारप्रकोष्ठके ॥ <sup>मेलदलनामा</sup> गृहवगृहणं देहलपङ्कनचतुर्गजिरे ॥१३॥ अधस्तादास

मु० २



धादे

दुम्रावेनामानी

दुम्रावेनामानी

वनेरानामानी

७५  
५५

गामग्रान्त  
नामानी  
मवजा  
दातामानि

शिलानामादास्वरिस्थितम् ॥ प्रष्टुनमन्तेदीरंस्यात्पदद्वारन्तुपक्षकम् ॥ १४ ॥ वलीकनीधोपटल  
 प्राप्तेयपटलञ्चेदिः ॥ गोपानसीतुवलाभी ॥ दनेवक्रदारुणि ॥ १५ ॥ कपोतपा<sup>कपोत</sup>लिया<sup>कपोत</sup>नुवि<sup>कपोत</sup>ड्डं  
 पुंनपुंसकम् ॥ स्त्री<sup>वरेनामानी</sup>दी<sup>दमा</sup>दीर<sup>वनेरानामानी</sup>प्रतीहारः स्याद्विताद्विस्तुवेदिका ॥ १६ ॥ तोरणे<sup>तोरे</sup>स्त्री<sup>तोरे</sup>वहिरि<sup>तोरे</sup>पुर<sup>तोरे</sup>द्वारन्तुगो  
 पुरम् ॥ कूटं<sup>कूट</sup>पू<sup>कूट</sup>र्वा<sup>कूट</sup>रिय<sup>कूट</sup>द्वि<sup>कूट</sup>स्तिनरं<sup>कूट</sup>वतास्मिन्<sup>कूट</sup>यन्नि<sup>कूट</sup>वु ॥ १७ ॥ कपाटमुररन्तु<sup>कपाट</sup>त्येत<sup>कपाट</sup>द्विक<sup>कपाट</sup>मो<sup>कपाट</sup>गुलं<sup>कपाट</sup>नना ॥  
 आरोहो<sup>आरोह</sup>णं<sup>आरोह</sup>स्यात्सोपानं<sup>आरोह</sup>निष्प्र<sup>आरोह</sup>णस्त्वधिरोहिणी ॥ १८ ॥ समाजनी<sup>समाज</sup>शोधनी<sup>समाज</sup>स्यात्सि<sup>समाज</sup>ङ्क<sup>समाज</sup>रोवक<sup>समाज</sup>रस्तथा ॥  
 क्षिप्तेमुखं<sup>क्षिप्ते</sup>निस्सरणं<sup>क्षिप्ते</sup>सन्निवेशो<sup>क्षिप्ते</sup>निष्कर्षणम् ॥ १९ ॥ समो<sup>सम</sup>सम्भ<sup>सम</sup>र्ष<sup>सम</sup>संज्ञा<sup>सम</sup>मौ<sup>सम</sup>वेश<sup>सम</sup>मभू<sup>सम</sup>वस्तु<sup>सम</sup>रस्त्रियाम् ॥ गा  
 मान्न<sup>मान्न</sup>उपशाल्य<sup>मान्न</sup>स्यात्सीम<sup>मान्न</sup>सीमे<sup>मान्न</sup>स्त्रिया<sup>मान्न</sup>मुभे ॥ २० ॥ घोष<sup>घोष</sup>आभी<sup>घोष</sup>रप<sup>घोष</sup>ल्ली<sup>घोष</sup>स्यात्पक्व<sup>घोष</sup>ए<sup>घोष</sup>शवरा<sup>घोष</sup>लायः ॥ इ  
 पुरवर्गः ॥ महीध्रेशिखरिद्विमाभ्यदाहार्यधरपर्वताः ॥ अदिगोत्रागिगावाश्वलाशैलांश्वियाः ॥



अ.  
२३

पर्वतनाम

पर्वतः

पर्वतः

लोकालोकश्चक्रवालः त्रिकूटश्चिककुत्समौ ॥ अस्तसुचरमः क्षामदुदयः पूर्वपर्वतः ॥ १ ॥  
हिमवानिषधोविन्ध्योमाल्यवान्यारियात्रकः ॥ गन्धमादनमन्येचहेमकूटादयोनिगाः ॥ ३ ॥  
हिमालयोदिराजः स्यान्मलयश्चन्दनाचलः ॥ पाषाणप्रसरंग्रावोपलाप्रमानः शि  
लादृषत् ॥ ४ ॥ कूटस्त्रीशिखरंशृङ्गं प्रपातस्त्ववटोभृगुः ॥ कटकास्त्रीनितम्बोद्रेः सुप्रस्थ  
सानुरस्त्रियाम् ॥ ५ ॥ ३ सैवसर्वेणवारिप्रवाहेनिर्गरोजरः ॥ दरीतुंकन्दरावास्त्रीदेवखा  
तविलेगुहा ॥ गङ्गरंगण्डप्रोलास्तुच्युताः स्थूलोपलागिरेः ॥ ६ ॥ खनिः स्त्रियामाकरः  
स्यात्पादाप्रत्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥ उपत्यका इरासान्नाभूमिरुद्धमधित्यकाः ॥ ८ ॥ धातुस्मिन

रामः  
२३







अ.  
२४

केशाचिफलवान्फलिनफली॥ प्रफुल्लोत्फुल्लसंफुल्लव्याकोशविकसफुटाः॥७॥ फुल्लज्यैतविकसि  
 तैस्युरवन्धादयस्त्रिषु॥ स्थाणुरस्त्रीध्रुवप्रशङ्कुरुस्वशाखः शिपः क्षुपः॥८॥ अत्रकारणैस्तन्वगु  
 ल्मोवल्लीतुवततिलता॥ लताप्रतानिनीवीरुमुल्लिन्तुलपमित्यपि॥९॥ नागाद्यारोहउच्छ्र  
 यउत्सेधश्चोक्षयश्चसः॥ अस्त्रीप्रकारः स्कन्धस्यान्मूलाव्वाखावधिस्तराः॥१०॥ सम  
 शारवालतेस्कन्धशारवाशालेशिपाजटे॥ शारवाशिफोवरोरुः स्यान्मूलाव्वाग्रङ्गताल  
 ता॥११॥ शिरोग्रशिखरोवानीमूलं बुधोद्भिः नामकाः॥ सारोमज्जो समो लवकस्त्रीवल्लवल्क  
 लमस्त्रियाम्॥३॥ काष्ठदोविन्धनं तैधः इधमेधः समिस्त्रियाम्॥ निष्कुरुः कोटरम्वा

स र म  
व ना मर मः  
२४



मा

एणादाणीज्याकाशपीक्षितिः॥१॥सर्वसहसुमतावसुधोद्दीवसुन्धरा॥गोत्राकुःपृथिवीपृ  
थ्वीश्मावनिर्भेदिनीमहि॥२॥भूतधात्रीरत्नगर्भाविपुलासागरान्वरा॥मृण्मृत्तिकाप्रदक्षु  
तुमृत्सामृत्स्नातुमृत्तिका॥३॥उर्वरासर्वसस्याद्यास्यादूषःसारमृत्तिका॥अवरानूचरो  
रूप्यन्यलिङ्गेस्थलंस्थली॥४॥समानोमरुधन्वानोद्धखिलाग्रहतेसमे॥त्रिभुवोऽजगतीलो  
कविष्टपेभुवनंजगत्॥५॥लोकोयमारतंवर्षेपारावत्योस्तुयोवधे॥देशाःप्राग्दक्षिणःप्रच्य  
उदीच्यःपश्चिमोत्तरः॥६॥प्रत्येनोर्लोकदेशःस्थान्मध्यदेशस्तुमध्यमः॥आर्यावर्तःपृथु  
र्मिध्याविन्ध्यहिमागयोः॥७॥नीवृज्जनिपदोदेशविषयोत्पवर्तनम्॥त्रिधागोष्ठान्ध  
मायेनज्ञानदूलइत्यपि॥८॥कुमुदान्कुमुदप्रायिवेतस्वान्वरुवेतसे॥शाडूलप्रशाद



रावली ६ संत १५५

लो १

ॐ  
३२

मरग  
नमः

दहरितेसजन्मालेतुपक्षितः॥९॥ जलप्रायमनसं स्यात्पुंसिककृत्तयाविधः॥ स्त्रीशर्कराशर्करित्वा  
 मशार्करः शर्करावति॥१०॥ देशएवादिमावेवमुनेयास्सिकलावति॥ देशोनधमुष्टुष्टुमुसं  
 नवीहिपालितः॥११॥ स्यान्नदीमातृकोदेवमातृककृत्तयाक्रमम्॥ सुराक्षिदेशराज  
 न्वास्याततो न्यत्रराजवान्॥१२॥ गोष्टुगोस्थानकन्ततुगोष्टीनन्तपूर्वकम्॥ पय्यन्तभूय  
 रिसरस्सेतुरालीपुमान्स्त्रियाम्॥१३॥ वामलरश्मनाकुश्वल्मीकेपुनपुंसकम्॥ अय  
 नंवर्त्तमागार्धपन्थानः पदवीसृतिः॥१४॥ सरणिः पडतिः पद्यावर्त्तमन्येकपदीतिच॥  
 अतिपन्थास्सुपन्थाश्च सत्पथश्चाधितिधुनि॥१५॥ व्यधोर्दुरधोविमर्शः कदधाका  
 पथस्समे॥ अपन्थास्त्वपथवृत्त्यंशुगीर्कचतुष्पथे॥१६॥ ज्ञानरन्ध्रश्चन्योधावा

११७: ६ ले



मातरपितरौ

धवः प्रियः पतिर्मर्त्ताज्ञारः सुपपत्तिस्मौ ॥ १७ ॥ अमृतं ज्ञानं तः कुंजे मृते तर्त्तगोलकः ॥ भावे त्रेषां नान्नो भान्ध  
 मिन्यो नान्तरावुभौ ॥ १८ ॥ मातरपितरौ धेतरौ प्रसूत नयितारौ ॥ अमृतं अमृतं अमृतं अमृतं अमृतं अमृतं अमृतं  
 दपतिज्ञं पतीज्ञाया पतिभार्या पतिवतौ ॥ गर्भाशयो ज्ञानयुस्या दुल्लं कललमस्त्रियां ॥ १९ ॥ सूतिमासौ वै ज्ञाननो  
 भर्गो नृसौ समौ ॥ तृतीयप्रवृत्तिरंठक्तीवंः शंखेन पुंसकेः ॥ २० ॥ शिशुतुं शशवं बाल्यं नारुत्तं यौवनं समौ  
 त्स्यात्स्याधिरं तु वृद्धं तु सपेनुवाष्टिकं ॥ २१ ॥ पलितं ज्ञानं शौक्लं केशादौ विस्मिन्नं ज्ञानं ॥ स्यादुज्ञानं शयाधिं भा  
 तनया वतनं धयी ॥ २२ ॥ बालस्तु स्यान्मानवको वयस्य तहणं युवा ॥ प्रवयाः स्थविरो वृद्धो ज्ञानी श्रीरणो ज्ञरं  
 न्यथा ॥ वर्षीया दशमी ॥ २३ ॥ अथ रथान् सर्वज्ञत्वग्नियोगज्ञः ॥ जघन्यज्ञे स्युः कनिष्ठं यवी यौवनं ज्ञानं



७३०

७३० को ॥ जाः ॥ २५ ॥ जमा सो दुर्बल जातो वलवान्मां सलो सल ॥ तुटिल सुं दिभ सुं दी वृह कुक्षिः पिचंडिलः ॥ २६ ॥ अथ  
७३० ॥ ४० ॥ दीटो वनाट अथ भाटो नतनासिके ॥ केशवः केशिकः केशी वलिना वलिभः समौ ॥ २७ ॥ विकलागस्तु योगदः  
सर्वोद्गस्यवा मनः ॥ मुरगाः स्यात्सुरगा सो विलो विगतनासिकः ॥ २८ ॥ खरसाः स्यात्खरगासः ---  
----- ॥ अर्धलुक्पुंजातुः स्यात्सं दुः सदतलानुकः ॥ २९ ॥ स्यादेडेधदिरः कुम्भे गदलः ककु रे कु रिगः ॥ कदं  
वकसूवाकसः खलनि सेंद्रुपकः ॥ ३० ॥ पृश्निबल्यत नौ शोराः पंगो नु हस्तु मंडिते ॥ बलिरः केकरखोटे  
खिखिपुत्ररावुरं ॥ ३१ ॥ जडुलः काकलः पिपुत्तिलकः सिलकालकः ॥ अनामयं स्यादा रोगं चिकित्सा रुक्म  
निकिया ॥ ३२ ॥ नेषतौषधभैषज्या न्यगदो जायुरित्यपि ॥ स्त्रीरुगाज्ञा चोपनापे रोगवाधिगदामया ॥ ३३ ॥ पुन्य

७  
४०



लम्बा लयशेषः प्रतिशयायसुपीनसः ॥ स्त्रीलुप्तनंलवः ३१॥ सिकसस्तुल्यवयुपुमान् ॥ ३४ ॥ शोकलुप्तवयुपुशोचः पादस्फो  
 टोविपादिका ॥ कित्ताससिधौकंठं तुपासया माविचर्चिका ॥ ३५ ॥ कंदः खर्जस्तुकंद्या किफोटफटिकं विषु ॥ वरणो  
 स्त्रिया मीर्मसरुः स्त्रीवेनाजीवाण पुमान् ॥ ३६ ॥ कोठो मंडलकंकुपुमिरेदुर्नामकार्शसी ॥ न्पानाहसुविवंधः स्याद्दहणीरु  
 कावाहिका ॥ ३७ ॥ प्रहं दिकावमिअस्त्रीपुमांस्त्रवसपुसमाः ॥ व्याधिमोहाविदपि स्यात्तुरमेहभगदराः ॥ ३८ ॥ नृप  
 रीमत्रकृत्स्यात्पूर्वे शुक्रावधेस्त्रिषु ॥ रोगहार्यगदकारोत्तिष्वैयचिकित्सके ॥ ३९ ॥ वौत्तोसमयैकैत्य उल्लाचे निर्ग  
 तोगदान् ॥ ग्लानग्लान्त्वासादि विह्वनोद्याधिपैदुः ॥ ४० ॥ न्पानुरोभ्यसितेत्यतः समौपामरुकच्छरी ॥ दुरुगो  
 दुरुगो स्यादशो रोगयुतोर्शसः ॥ कानकीवातरोगी स्यात्तातिसारोतिसारकी ॥ स्युः क्लिप्ताक्षेचुल्लचिल्लपल्लाः



॥ ४३ ॥ को ॥ किनेदिगचापमी ॥ ४३ ॥ उन्मासउन्मातवतिशेषलः श्रेषण ॥ न्यत्रेरुमेरुजावृद्धनाभौतुं दिलतुदिभौ  
 दि ॥ ४४ ॥ किलासीसीधलोर्ध्वैर्दृष्टीलेसर्तसुर्दितौ ॥ सुकंतेजोरेतसीचवीज्ञवीर्येद्रिगिबु ॥ ४४ ॥ मातुवित्तंकफश्रेष  
 लीयावृत्तगसुधरा ॥ पशिततरसमांसंपललं कुशमासमिपं ॥ ४५ ॥ उन्नतशुकमासस्यात्र वल्लुरं विलिङ्गकं ॥ रुधरेसु  
 ग्लोहिनासुरकलतज्ञशोरितं ॥ ४६ ॥ बुक्कागमांसुहृदयं हृद्येदसुवयावसा ॥ यश्चास्तीयासिरामन्यामाडीतुथ  
 धसतिः सरा ॥ ४७ ॥ तिलकंकोममपि ॥ गौर्दृक् ॥ मेलोस्त्रियां ॥ अत्रं पुरीतं कुल्लसुक्तीहापुंसाथवससा ॥ ४८  
 सायुस्त्रियां कालखंडयकनीतुसमेदमे ॥ सुगिकास्यंदीनीलालाहृषिकानेउद्योर्मर्त्त ॥ ४९ ॥ स्रवं प्रस्मावउका  
 रावकलेशिमलंसकृत् ॥ पुरीवंसाथवर्चसस्त्रीविष्टाविष्टोस्त्रियां ॥ ५० ॥ स्यात्कृष्णकृष्णलोस्त्रीकीकसं

ओं

राम



रु

संकुल्यमस्थित ॥ स्याच्छरीरास्थिकं कालपृष्ठास्मिन्नुकशेका ॥ ५१ ॥ शिरास्थानिकरोहिः स्त्रीपार्श्वस्थितुपाश्रुकर  
 म्मंगं प्रतीको वयवो पघनो यकले परं ॥ ५२ ॥ गात्रं च पुसहनने शरीरं वर्ष विग्रह ॥ कायो देहः स्त्रीवपुः सिस्त्रियां मूर्ति  
 स्तुतुः सनूः ॥ ५३ ॥ पादाग्रं प्रपदं पादः पदं प्रीप्सरगोस्त्रियां ॥ तद्वंघे घटिके सुल्यो पुमान्पाहि रधस्तयोः ॥ ५४ ॥ त्रिधा  
 तु प्रसूता ज्ञानकृपया पृषि पदस्त्रिया म् ॥ किं स्त्रीवे पुमान् रुस्तं संधिपुं सिवंदराः ॥ ५५ ॥ गुदं च पायुर्न विस्ति न मे  
 र पादयोः कटो नाशो रिण फलके कटि शो रिण ककुदाती ॥ ५६ ॥ पश्चान्ति तं वृ स्त्री कट्याः स्त्रीवे तु जं घनं पु  
 रुः ॥ कूपकौ तु नितं वस्त्रौ द्वय हीने तु कंदुरे ॥ ५७ ॥ स्त्रियां स्थितौ कटि शो प्रोयावु पुवत्तमाश्रयो ॥ भगं चो निहयो रि  
 शो मेहं मेहन शो यसी ॥ ५८ ॥ सुष्ठु उको शो वृषण पृष्ठवंशा धरे विकम् ॥ पिचरु कुर्दिजिठरो दरं तुंदस्तनौ कुचौ ॥ ५९ ॥  
 चूचुकं तु कचाग्रं स्यान्न न कोडुं भुजातरा ॥ उरो वत्सं च ववश्च एष्टु चरमं तं ॥ ६० ॥ स्करो भुजशिरो सो स्त्री संधीतस्यो  
 वत्तं चुरागी ॥ वाङ्मते उभे कलो पाश्चम स्त्रीतयो परः ॥ ६१ ॥ मध्यमं चावल गने च मध्यो स्त्री हा परो द्वयो ॥ अन्तर्मादूपा

कट्याः  
 भगममम  
 ३



जे

११० को

दि० ४२

कोष्टोदोः स्यात्कर्पेण सुकर्परः ॥ ६१ ॥ नस्योपसिप्रगंडस्यात्युकोष्टस्य चाप्यधः ॥ मणिबंधादाकनिहंकरस्य वरभो  
वहिः ॥ पंचशरं शयं पाणि रज्जुनी स्याद्देशिनी ॥ १११ ॥ गुह्यः करसायास्युः ॥ पुस्यं गुह्यः प्रदेशिनी ॥ ६३ ॥ मध्यमा  
नामिका चापिकनिष्ठा चेति तां कुं भात ॥ पुनर्भवः कररुहो नखोस्त्री नखरोस्त्रियं ॥ ६४ ॥ प्रादेशतालगो कर्मास  
र्जुन्यादियुते तते ॥ ११२ ॥ गुह्यं स कनिष्ठे स्याद्विना सिद्धादशा गुला ॥ ६५ ॥ पणोऽथ पेटप्रतलप्रहस्ता विस्तृता गुलौ ॥ द्वौ संह  
नौ सिंहतलप्रतलौ वा महतिगौ ॥ ६६ ॥ पणिर्निकुब्धः प्रसुनिलौ युतौ वंस्त्रिः पुमान् ॥ प्रकोष्ठे विस्तृतकरे हसोऽथ  
मनुद्वया ॥ ६७ ॥ सविः स्यादश्विः सनिष्कनिष्ठे मनुहिना ॥ वामो बाहोः सकर्तव्यो स तयोस्त्रियं गंतं ॥ ६८ ॥ ऊर्ध्वं वि  
स्तृतो पाणि नृमाणो योरुपं विषु ॥ केठो गलो यगीहाया शिरोधिः कंधरेत्यपि ॥ ६९ ॥ कंबुग्रीवा विरेखा स्य पटुः घाटा  
रुकादिक् ॥ वक्रास्ये वदने ननु इमानं ननु यनं सुखं ॥ ७० ॥ क्लीबे प्राणं गंधवहा घोराणां सा तु नासिका ॥ बोधधरो  
तुह्यनवदौ दशनवा मसी ॥ ७१ ॥ अधस्ताच्चिबुकं गंडौ कपोलो न त्वराहृतुः ॥ रदना दृष्टिना दंतारदा सा तु तुका कुर ॥ ७२

रभ  
४२



व

रसतारसनातिद्वयांतावोष्टस्यसुकेणी॥ तलाटपलकंगोधिखर्चदग्धांभुवोस्त्रियां॥ ७३॥ कर्ममखीवुवोर्मधं  
 तारकाक्षराकमीनिका॥ लोचननयनंनेत्रमीक्षणंचतुरक्षरा॥ ७४॥ दृष्टीचासुनेत्रौवुरोदनेचासुससुच  
 ज्योतिर्गौनेत्रयोर्मौकसाक्षेपांगदर्शनौ॥ ७५॥ कर्णशृङ्गयोपुंसिभुतिःस्थीमवगंभवः॥ ७६॥ मांगंतिभूषा  
 र्थमूर्धनामसकोस्त्रियां॥ ७७॥ चिकुरःकुंतलोवालःकचकेशःशिरोगहः॥ तद्वैकेशिकेकैश्यमूकाश्चर्लकुंत  
 लाः॥ ७८॥ तेललाटेभ्रमरकाःकाकपक्षःशिरंरिकः॥ कवरीकेशवेशोयधम्मिलासंकेताःकचाः॥ ७९॥  
 शिखात्रुशकेशपाश्रीवृतिनसुसदाज्ञा॥ वेणिपुवेणीशीर्षस्यशिरःस्थौविषदेकचे॥ ८०॥ पाशःपक्षग्रहस्त  
 कलापार्थाकर्चात्परे॥ नखरुहंगेमलोमतद्वद्वैश्वसुपुंमुखे॥ ८१॥ आकल्पवेशोनेपथोपतिकर्षसाधनु॥ दशैनेविषति  
 कर्तलंकरीसुश्रुमंडितः॥ ८२॥ पसाधितोलंकृतश्चभूषितश्चपरिष्कृतः॥ चिकुडाजिह्वुरेचिसुभूषणंदलंक्रिया  
 टर॥ ज्वलेकारस्याभरणंपरिष्कारोविभूषणं॥ मंडनेचायमुकटंकिरीटंपुंनपुंसकं॥ ८३॥ चडामणिमिशिरास्तेतरलो

वडासगि

मं



ॐ

१० को  
दि. ४३

हारमध्यगः ॥ बालपासापरित्यागत्रपात्रपाल्लारिका ॥ ८४ ॥ कर्लिकात्तलपत्रं स्यात्कुंडलं कर्लीवेष्टनं ॥ गौवेयकं क  
वभ्रपालं वमानललं निका ॥ ८५ ॥ स्वर्णैः प्रालंबिका योराः सुविका मोक्तिकैः कृता ॥ हारो मुक्तावली वेष्टनं नैसर्गशतया  
ष्टिकः ॥ ८६ ॥ हारभेदाद्यष्टिभेदायुष्टमुष्टार्धगोस्तनाः ॥ अर्धहारो मासावक एकावली कयष्टिका ॥ ८७ ॥ सैवनक्षत्रमा  
लास्यात्तत्रविंशतिमौक्तिका ॥ ग्रावायकः परिहार्यः कटको बल योस्त्रियां ॥ ८८ ॥ कयूरं मंगदं तैर्नृपौ गुलीयकमूर्मिका  
साक्षरं गुलीमुद्रासाकं कंकरधूपणं ॥ ८९ ॥ स्त्रीकदां मेखलाकां स्त्रीसप्तकीरक्षणाः स्त्रियां ॥ स्त्रीवेसारसनवाद्य  
पुंकदां मृत्सलं त्रिषु ॥ ९० ॥ पादांगदुलाकोटिर्मंजरीनूपरोस्त्रियां ॥ हसकः पादकटकः किंकिणी लुडपटिका ॥ ९१ ॥ त्वव  
कलकिमिरोमागिबस्त्रयोर्दशत्रिषु ॥ वाक्कुं लोमादिफलं तु कार्या संवा दं वनत ॥ ९२ ॥ कोशेय किमिकोशेयं स्य क  
वसुगरोमज्ञं ॥ अनाहतं निषुवागितं च कचनवांबरे ॥ ९३ ॥ तस्या दुहमनीयं यद्वौतयोर्ववसुयोर्गुगं ॥ यत्रोसौ धौतकौ  
शेयं वक्रं मूल्यमहाधनं ॥ ९४ ॥ लोमं द्रुकलं स्याद्देनुर्विनिवीतपादुतं त्रिषु ॥ स्त्रियां वद्वत्वेव स्य दशासुर्वस्त्रयोर्दशो

ॐ

राम

४३



दे धीमायामिगानाहः परिग्राहो विंशालता ॥ पटमरंजी र्मा वस्त्रं समौ रैकक कर्पटौ ॥ ९५ ॥ वस्त्रमच्छादनं वा सञ्जो लंबसनमं मुकु  
 कं ॥ सुचेलकं पटो स्त्री वीरसिस्थलवृद्धिक ॥ अंतरीयोपसंवा नपरिधानान्य धौ मुके ॥ द्वौ प्रावारो नरासंगौ समौ दृढतिका ॥  
 तथा ॥ ९६ ॥ निचोलः प्रच्छदपटः समौ रत्नकंक वलौ ॥ संवा नमुत्ररीयं च चोलकुर्था सकस्त्रिया ॥ ९७ ॥ नीशा रसु प्रा वरणे  
 निहानिल निवारणे ॥ अर्धोरुकं वरस्त्री रणं स्या चंडानकमं मुकम् ॥ ९८ ॥ स्या विष्ठा प्रपदी नंत्य प्रोत्था प्रपदं हि यं ॥ अस्त्री वि  
 तानमुल्लोचे दूषायं वस्त्रं वेश्मनि ॥ ९९ ॥ प्रमिसीराय वनिका स्या त्रिस्करणी च सा ॥ परिकर्मो गसस्कारः स्या न्या रिष्टि र्मा तं  
 नमृता ॥ उद्वर्तनोत्पादने द्वे स्त्री वेशा प्रवज्रा प्रव ॥ स्वाम चर्वा नुवा र्चिकं स्या सको थप्रवो धनं ॥ १०० ॥ अनु च पत्रे लेखा  
 पवा गुलिरि मे स्त्रियो ॥ तमाल पत्रतिलक चित्रका णि विशेषक ॥ १०१ ॥ द्विती संचतुरीयं च नस्त्रिया मयकुं कं मम् ॥ क  
 र्मा रत्नन्याग्नि शिरवं वरं वाली कपी नने ॥ १०२ ॥ रक्तसंको चधि मुने वीर लो हित चंदने ॥ लाहारा दास्य तु स्त्री वेशा वो



न० को  
वि ४४

१००५ मालयः ॥ १५ ॥ लवर्गदेवकुसुमं श्रीसंज्ञमयं जायकम् ॥ कालीयकंच कालाचुसार्धं वायसमर्थकम् ॥ १६ ॥ वंशिकागुशा  
 जार्हलोहं किमिज्जोगंत ॥ कालागुर्वगुरुस्यानुमंगल्यां मभिगधयम् ॥ १७ ॥ यत्तद्यः सत्तरेसोरालसर्वसावधि ॥ वदुदपो  
 पयवकधपकुत्रिमधपको तुष्टः पिंडकः सिल्लेयावनोपययावो श्रीवासेचतस्सोपिमेवेष्टसालद्वौ १८ ॥ मगमाभिर्भृगसद  
 स्वसरीचाशुकोलकं ककोलकं कोषफलम ॥ १९ ॥ धनसारश्चंद्रसत्तासिताभोहिमवालुकः गंधसारोमलयजो  
 भद्रं श्रीमन्नुतोत्रियाम् ॥ २० ॥ तैलपर्णिकगोसिर्ध्वरीचंदमस्त्रियाम् तिलपर्णिनुपत्रागंजनेक्षचन्दनम् ॥ २१ ॥ कुचंदनचाच  
 जीलीकाभाजानीकलेसमे कर्पूरागुठवस्त्ररीककोलेयत्तवर्दमः ॥ २२ ॥ गात्रानुलेपनीवतीवर्षकं स्याद्विलेपनम् चूसा  
 निवासयोगास्सुर्नवितभासितं चिबु ॥ २३ ॥ सस्रस्रोगमालाद्यैर्यस्यातदधिवासनम् माल्यं मालास्रजाभुधिकोशमये  
 तुगभक्तः प्रधृष्टकशिखालंबिपुणेन्यत्तलुलामकम् ॥ २४ ॥ पुरालंबमृजुलविस्थाकुण्डैकद्विकदुयंत ॥ २५ ॥ यत्तिर्यक्तिप्रभु  
 ॥ सिशिखास्वापीउगोसो चरनास्यात्यरीस्यदः प्राप्नोमपरिष्कृता उपाधानवृषवर्हः शयंशयनीकम् शयनं संवय



शयनं मत्तय र्या वा कपालं काः खट्वा समाः गेदुःकः कंकोदीया प्रदीपः पीठमासना मृद्वकक संपूटकः  
 प्रतिग्राहायनग्रहः प्रसाधनी कंति का विघ्नतपटवासका दर्पणो मृकराशौ व्यजनं तालवतकम्  
 इत्यमरसिंहकृतौ न करगः संततिर्गोत्रजननो कुलान्यभिजनाभयो वंशो नवायं संतानो वर्णास्प  
 ब्राह्मणादयः राजवीजी राजवंशो वीज्यसकुलसम्भवः महाकुली कुलीनार्यसंभ्या राजनसा  
 वः ब्रह्मवारी गवानाप्रस्थो मिथुश्चतुष्टये आश्विनो सिद्धि जात्यमजन्म भदेवा इवा विप्रश्च ब्राह्म  
 णो सोषट्कर्मायोगादिभिर्भुजा मेमांस्तको जैमिनीयो वेदांती ब्रह्मवाहिनी वैशेषिके स्यात्सुका मो  
 गता शुन्यवादनी नैयायकः सूत्रादापादः स्याद्वादी कक आर्हतः विद्या नियमश्चिदावस्तः सत्सुधि  
 को विदो बुधः धीरमनीषी तप्रज्ञा संख्या चानुषंदिनः कवि धीमान् सुदीर्घजीवः कृषिलव्यवर्था विव  
 दयाः दूरदर्शी दीर्घदर्शी श्रोत्रियकांद्यौ समौ उपाध्याये ध्यायको यस्यात्रिषेका द्विर्द्वारुः ॥ ३ ॥



सधप

यारया कदाचार्य आदेष्टानाधरेवती यद्युत्तमानोयससोमवतिदीक्षितः इत्याशीलोयायनूकोय  
त्वात्विधिनेप्रवान् सगीष्वातीष्वा<sup>प</sup>पति सोमपितीतसोमयाः सर्ववेदाः सयेनेहोयागः सर्वसद।  
दक्षिणा यन्तानुप्रववनेसंगेधीतीग्योस्तया लव्यान्त्यससमावृजः सन्तानमिषवेकते क्वाते  
वासिनोशिषोशैस्त्रैमकालिक एवमन्ननावारामिद्यसः ब्रह्मचारिणः सतीर्यास्त्रिकमस्तः श्रि  
तवानमिममिंविन् पारंपार्योपदेसस्याद्वैतिह्यमितिहायमे उपतातानमाद्यं स्यात्तात्वारभउ  
पक्रमन् यत्तःसवोधरेयागः सप्ततंतुम्मैख कुतु पाठेहोम आतिथीनोसपर्यानर्पणं वलिः एते  
पंचमहायाताब्रह्मयसाहेनामकाः अथापनेब्रह्मयतः पितृपतस्तर्पणम् होमोदैवो वैलिन् यज्ञोति  
रिक्तने समजापरीषद्दोहीसभासमतिसेसदः आश्यानीक्रीवमास्थानंस्त्रिनपूसकयोसदा प्राग्वं  
शः प्राग्वविर्गहात्सदंस्याविधिदर्शिनिसभासदः सभास्तारासभासामाजिकाश्चने अधर्यूज्ञानहोता



श्रेयस्तस्मात्तुर्विदः क्रमात् आग्नीध्याद्याधनैर्वीद्याज्जुनीजोयाकाञ्चते वेदिः परीकृता भूमि  
 समेख्यंदिलचतुर्धरे वर्यालोय एकदको कुं वासुगहनवृत्ती यूपानितर्मनिर्मयादरुणि  
 त्वरणिर्द्वयो दक्षिणमिर्गहं पत्न्या हव नियो ज्यौ प्रयः आग्नित्रयमदं जेत प्रणीत सत्कृतो नला  
 स्रग्ध्यापरिचायोथाचा यवमौ प्रयोगिनः योगार्हयत्वा दानीवा दक्षीणा मिप्रणीतये नस्मिन्ना  
 नायोथाग्नौ यी सहावहत भू क्रिया जक्तमधे नू धाम्ना च यास्यादमि समिधेने गायत्री प्रसू  
 खं च दौ हव्याया केचरु पुमान् अमिता सासृजो सेया दक्षीरे स्यादधियो मज धतित्रं वा जतनं चरवि  
 म्ना वरमया यषदा ज्यो सद धा ज्येयर्मार्गं तयायकं हव्याक ये दैवपैत्रे याग्यनेपात्रं स्वादीकं  
 धामोप भज सुनात स्वो मे दा सचः श्रिया उपकृतमय रसौ यो मिमं न्य स्वादिकं पापसंकम  
 समनं तो त्वाणां तत्र ये वध वाचलिगा प्रमितो या सपवित्र मोक्षित हते साचा यो यं हं विरयो तनुत  
 त्रिषु वसट्कं दीक्षां नो व भ



योयज्ञेनतस्माहेतुयज्ञिनः त्रिष्वयक्रतुकर्मसंपूर्णस्वातादिकर्मणि श्रम्यंतंविद्यसो  
म धंदयतसेषमो जनशेषयो न्यागोविहयिदं दाना मुनसजनविस्मर्त्तने आश्रायानेवितरण  
सपरीनेप्रतिपादनं श्रेष्ठानंनिर्वपणमपवर्त्तननशंदति मृतार्थेनदृष्टानंत्रिषु  
46 सादोर्द्धदेहिकं पितृदानंनिवायः स्थासाधनतकर्मशास्त्रता अन्वाहयमासिकसा  
समोद्भूः कुतपोस्त्रियां पण्डितेप्राणापरीष्वश्रान्तेसमावगवेषाणा सनिस्वधोषणा  
यात्रामिषस्तियानयना षट्सुविष्वर्च्यमर्च्यार्थपाद्योपादायवाणिनी कुमादोतिथ्यातिथे  
यावतिथ्यायंनसाधुनी सुहावेतिश्रीमानंतुरनिधिर्नागहृगते प्रचूर्याकप्रचूरणीकावभु  
स्थानंतुगौरवं पूजनमः स्थापविर्त्तिसपर्यार्वाहणासुमाः वरिवस्थानशुश्रूषायरीर्या  
पुयासनं ब्रज्यादाद्यापर्यंतंवर्यानीपविस्ति ति उस्त्यशस्त्रावमनेमयमौनिमभाषण

र्यासा



मनुष्यवीक्ष्य यांचवन्परीयादीप्रकृमन् पर्याप्तातिपास्तसुस्थानपर्यायउपत्ययःनिय  
मोव्रतमहिजस्योपवासादिपुन्यकं ज्योपवसंतपकासोविवेकः यथात्मना स्याद्व्यस्य  
वसंवृताधायनधिरयां जलिधः पाठेब्रह्मांतलीपठे विप्रुसोब्रह्मविदवः ध्यानयोगास  
नेब्रह्मासंकैलो विधीकृतो मुखस्स्यामयमल्योनुकलयस्तुततोधमा संस्कारपूर्व  
हारां स्यादुपकारांश्रुते समेतपादारां स्यादुपाकरांश्रुते नित्यपरिव्राटकर्मदीया  
गारांश्रुतिमस्करि तपश्चितापसः पारीकां द्विवातयमोमुतीः तपश्चेशमहोदंतोवरा  
शिर्वीह्मवारीणा जपयस्सचचमः स्नानकस्वास्तुतोत्रती येतिर्नितेचिद्यमायायतिनोयत  
यश्चेते यः स्यंदलेव्रतवशाचेते स्यंदिलपायसो स्यादिलश्चात्रिरजस्तमसस्यर्द्धयाति  
गाः पवि जः जयत एत पाखंडाः सर्वलिङ्गित पास्तापो दे



७०  
४७

दृष्ट्या योऽब्रजे संभस्त्रवैरावा अस्त्रीकमण्डलुकुण्डी ब्रजनामास्तनवपी अजिनं चर्मकस्त्रिमेतं  
मिताकचं चक्रे स्वध्यायः स्वाजयः सुत्या भिवः स्ननं च स्वा सर्वतसमपेधं सिजपं त्रिष्वेव मर्षणं  
दर्शं अयौ र्णमास्रयागौ पदं तयोः पृथक् शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म न द्यतः नियमस्तस्य  
कर्म नित्यं मासं तसाधनं शिव उर्द्ध्वोत्तिसकः सिद्धांती अष्टमार्गिका पांचांगिकः पाशुपतो  
नकुलोद्यामहाब्रती कपाली सामसिद्धांती त्रिकस्याद्विधेशरूपा यामलोहमार्गीया त्रिकमे  
दीपद्विकः पूर्वसायी महामार्गी भवती दक्षिणागमे प्राक्रोचमस्तोत्तिसकः कालाग्रायिकः  
समे वेकायनं सात्वाउत्तैस्त्वः पांचांगिका ~~रत्नचक्र~~ दत्तशुभा काशुवरा वर्हका नि  
होभतेः शुतपदः दायणाक्षरिं वराः नगाटः प्रावकोद्गीयो निर्ग्यानीवको होरं नभडी कर  
संमुद नचेयनं त्रिषु कलापरिवर्कोपीतं शादी वस्त्रितिलत्पातः नतिस्त्रियां नमस्कारः अ  
णामशुतमस्त्रिया उपवीतं यतस्रजं प्रोदते दक्षिणे करे प्राचीनावीनमस्य स्मिन्निवीतं कंठं